विद्यालयीकरण, समाजीकरण एवं पहचान

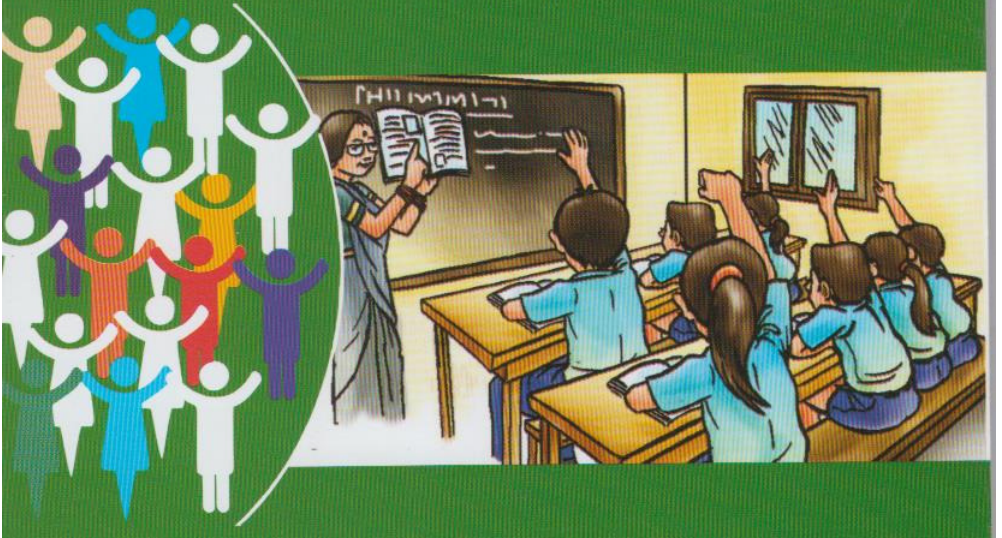

प्रो.(डॉ.) हेमलता तलेसरा

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

विषय-सूची

1. **समाजीकरण** 1-17

- प्रस्तावना
- समाजीकरण का अर्थ एवं परिभाषा
- समाजीकरण की प्रकृति तथा प्रक्रियाएँ
- विभिन्न अवस्थाओं में समाजीकरण
  - शैशवावस्था
  - बाल्यावस्था
  - किशोरावस्था
- समाजीकरण की प्रक्रियाओं के प्रकार
  - प्राथमिक प्रक्रियाएँ
  - समाजीकरण की गौण प्रक्रियाएँ
- समाजीकरण की प्रक्रिया में योगदान देने वाले कारक
  - परिवार का बालक के समाजीकरण में योगदान
  - समाजीकरण, समुदाय एवं समाज
  - खेल समूह द्वारा समाजीकरण
  - पड़ोस द्वारा समाजीकरण
  - विद्यालय का समाजीकरण में योगदान
  - बालक के समाजीकरण में शिक्षक का योगदान
  - बालक के समाजीकरण में जन संचार साधनों का योगदान
  - व्यवसाय का समाजीकरण पर प्रभाव
  - जातीय समूह
  - सम्प्रदाय
  - धर्म
  - स्काउटिंग एवं गाइडिंग

- समाजीकरण के घटक
- समाहार

2. व्यक्ति का आविर्भाव एवं उसकी पहचान 18-37

- प्रस्तावना
- पहचान कैसे बनाये?
- विभिन्न सामाजिक एवं संस्थागत सन्दर्भ में व्यक्ति की विविध पहचान
- आकांक्षाएँ
  - अर्थ
  - सकारात्मक एवं नकारात्मक आकांक्षाएँ
  - वास्तविक एवं काल्पनिक आकांक्षाएँ
  - आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले कारक
- आत्म सम्प्रत्यय
  - अर्थ
  - माता-पिता की प्रत्याशाओं के सन्दर्भ में आत्म सम्प्रत्यय
  - बालक की अभिवृति निर्माण में परिवार के सदस्यों का योगदान
  - बालक की शारीरिक स्थिति एवं जैविक परिपक्वता
  - बालक की आकांक्षाओं के निर्माण में रेडियो तथा टेलीविजन का प्रभाव
  - विद्यालयी अवसर का बालक की आकांक्षाओं पर प्रभाव
  - धार्मिक सम्बन्धन तथा बालक
  - हमउम्र दोस्तों का प्रभाव
  - परिवार की निम्न आर्थिक स्थिति का बालक पर प्रभाव
  - परिवार की व्यक्तिगत समस्याओं का बालक पर प्रभाव
  - हमउम्र के प्रति अभिवृत्ति
- बालक की पहचान पर सूचना तकनीकी तथा वैश्विक प्रभाव
- आत्म सम्प्रत्यय पर विद्यालयी शिक्षक द्वारा प्रतिबिम्बित जर्नल निर्माण
  - प्रतिबिम्बित जर्नल क्या है?
  - प्रतिबिम्बित जर्नल लेखन के महत्त्वपूर्ण बिन्दु
- जर्नल लेखन से पूर्व चिन्तन
- समाहार

3. **विद्यालयीकरण तथा पहचान** 38-50

- प्रस्तावना
- विद्यालयीकरण पहचान बनाने की एक प्रक्रिया के रूप में
  - आरोपण पहचान बनाने की एक प्रक्रिया के रूप में
  - उपार्जन पहचान की एक प्रक्रिया के रूप में
  - विकसित करना
- शिक्षक-शिष्य सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले कारक
  - सामाजिक कारक
  - आर्थिक कारक
  - व्यवसायीकरण
  - नैतिक कारक
- पहचान बनाने में प्रारम्भिक विद्यालयी अनुभव
- शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक
  - लिंग
  - बालक की शिक्षण विधियाँ
  - परिवार का प्रभाव
  - सन्दर्भ समूह
  - धर्म
  - जातिगत समूह
  - समकक्ष समूह
  - व्यक्तिगत समायोजन
- राष्ट्रीयता, धर्मनिरपेक्षता तथा मानवीय पहचान विकसित करने में विद्यालय का दायित्व
  - राष्ट्रीयता तथा विद्यालय का दायित्व
  - धर्मनिरपेक्षता तथा विद्यालय का दायित्व
  - मानवीय पहचान तथा विद्यालय का दायित्व
- समाहार

4. **सामाजिक जटिलताओं का सामना एवं शिक्षा का दायित्व** 51-66

- प्रस्तावना
- मानवीय क्रियाओं तथा सम्बन्धों का विस्तार
  - रीतियाँ
  - कार्य-प्रणालियाँ

- अधिकार
- पारस्परिक सहयोग
- समूह एवं उपसमूह
- मानव व्यवहार पर नियन्त्रण
- स्वतन्त्रता

- जटिलताओं का विस्तार
  - जनसंख्या की निरन्तरता को बनाये रखना
  - जनसंख्या में श्रम विभाजन
  - सामूहिक एकता
  - सामाजिक व्यवस्था में स्थायित्व एवं परिवर्तन
  - सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन
- संस्कृति की समरूपता बनाम पृथक् पहचान
  - व्यवहार में सहभागिता
  - पृथक् प्रतिमान
  - अनुकूलनशीलता
  - प्रतिमानों में जुड़ाव
  - परिवर्तनशीलता
  - सामाजिक विरासत का हस्तान्तरण
  - विशेष आचार तत्त्व
  - मूल तत्त्वों से पृथक् पहचान
- प्रतिद्वन्द्विता, अनिश्चितता एवं असुरक्षा
  - प्रतिद्वन्द्विता के कारण
  - प्रतिद्वन्द्विता की विशेषताएँ
- परिणामी पहचान का द्वन्द्व
- सामाजिक जटिलताओं का सामना करने हेतु शिक्षा का बढ़ता दायित्व एवं इसके कारण
  - जीवन की जटिलता
  - विशाल सांस्कृतिक विरासत
  - विशिष्ट वातावरण
  - घर एवं विश्व को जोड़ने वाली कड़ी
  - व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास
  - बहुमुखी चेतना का विकास

- आदर्शों व विचारधाराओं का प्रसार
- समाज की निरन्तरता का विकास
- शिक्षित नागरिकों का निर्माण

- समाहार

5. **शिक्षक की समग्र पहचान** 67-84

- प्रस्तावना
- शिक्षक की समाजीकरण प्रक्रिया का प्रभाव
  - विद्यार्थी, प्रौढ़ तथा प्रशिक्षणार्थी के रूप में पहचान स्थानान्तरित करने की जागरूकता
  - शिक्षक की पहचान बनाने वाले महत्त्वपूर्ण बिन्दु
  - शिक्षक द्वारा स्वयं के कार्यों से निरन्तर प्रभावित करना
- एक शिक्षक के रूप में स्वयं की आकांक्षाएँ एवं प्रयासों की प्रतिछाया
- शिक्षक के रूप में प्रगतिशील तथा पुनर्निर्माण हेतु मुक्त पहचान बनाना
  - शिक्षक विकास परिदृश्य
  - शिक्षकों के ज्ञान तथा कौशलों को खुलेपन के साथ साझा करना
  - समाज, अभिभावक एवं शिक्षा विभाग को प्रभावित करने हेतु सकारात्मक कार्य करना होगा
- शिक्षक की व्यावसायिक पहचान
- शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता
- मतभेद प्रबन्धन
  - शिक्षक समूह मतभेद के कारण
  - मतभेद प्रबन्धन के सम्भावित तरीके
- शिक्षक में जीवन मूल्यों का विकास
  - शिक्षक द्वारा दिमागी चिन्तन सत्र का आयोजन मूल्य विकसित किये जाते हैं, पढ़ाये नहीं जाते
- समाहार

❑❑❑